International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 6, Issue 5, May 2019
**Website-** www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

# उन्नीसवीं शताब्दी के धार्मिक एवम् सामाजिक सुधार में आधुनिक शिक्षा का योगदान

**शोद्यार्थी : पंकज कुमार कर्ण**
**विश्वविद्यालय इतिहास विभाग,**
**वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा**

उन्नीसवीं शताब्दी के सामाजिक सुधार आंदोलन नवचेतना का जागरण अथवा नवजागरण से आशय ऐसे सामाजिक सांस्कृतिक आन्दोलन से है, जिसमें कुरीतियों को दूर करने, स्त्रियों, शूद्रों, दलितों सहित समाज के कमजोर तबकों की स्थिति में सुधार लाने, धामिक अंधविश्वास और कमकाण्ड के विरूद्ध जन जागृति पैदा करने शिक्षा का प्रसार तथा लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, युक्ति सगतता एवं सहानुभूति का विकास करन और सामाजिक अन्याय के विरूद्ध जन अभियान चलाने सम्बन्धी प्रयत्न सम्मिलित है।

नवजागरण को जब अतीत के सन्दभ में संयोजित किया जाता है तो इसे पुनर्जागरण कहते हैं। पुनर्जागरण अतीत की अच्छाइयों को तलाश कर वर्तमान को उसके अनुसार नहीं जाता। वे अपनी परम्पराओ से कहना नहीं बल्कि उसमें सुधार करना चाहते थे। राजा राममोहन राय का विचार था कि धर्म में सुधार आने से सम्पूर्ण समाज में परिवर्तन आयेगा। धर्म की रीति कि जैसा संस्था वे बना रहे है, उसे प्रभावशाली बनाने के लिए राजा और जनता दोनों का ही मन व मस्तिष्क जीतना होगा। इसलिए इस संस्था का समानतावादी हाना अनिवाय है। स्वामी दयानन्द सरस्वती बाल विवाह के विरोधी थे और इसके शारीरिक निर्बलता का कारण मानते थे। उनके विचार से पुरूष के लिए 25 वर्ष व कन्या के लिए 16 वर्ष ब्रम्हचर्य पालन आवश्यक है। विवाह में वर और कन्या की सहमति को आवश्यक समझते थ।

उन्नीसवीं शताब्दी के सामाजिक सुधार आंदोलन स्वामी दयानन्द सरस्वती जाति को जन्माधारित नही ं वरन् कर्म के अनुसार मानते थे। मदिरापान व मास भक्षण को भी अनुचित

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

मानते थे। आज सारे देश में आर्य समाज की अनेक शाखाय ं है। शिक्षा क्षेत्र में भी उनका योगदान अद्वितीय है। स्वामी जी ऐंग्लों वैदिक (डी.ए.वी.) स्कूल सारे भारत में है। स्वामी जी के अनुयायियों द्वारा बनाये गये अस्पताल, पुस्तकालय, सामुदायिक भवन जनता की सेवा आज भी कर रहे है। ''सत्याथ ि प्रकाश'' ही आज तक ऐसी पुस्तक है, जो व्यापक रूप से प गये कि अस्पृश्यता, जाति व्यवस्था और जन्म से ऊँच–नीच के भेदभाव के रहते पिछड़े लोग आगे नहीं बढ़ सकते। महात्मा ज्योतिबा फुले का दृढ ़ विश्वास था कि दलितो में शिक्षा के बिना कोई सुधार और चेतना नहीं आ सकती। वह यह भो मानते थे कि दलित स्त्रियाँ पशुवत जीवन बिताती है। अगर उन्हें शिक्षित कर दिया जाय, तो आने वाले परिवार का स्वरूप ही बदल जायेगा। महात्मा ज्योतिबा फुले ने कहा कि शुद्रों के विनाश का मूल कारण उनमें व्याप्त अज्ञान है, इसलिए उन्होंने अज्ञान के विरूद्ध एक प्रकार से जिहाद छेड़ा था और शुद्रों की शिक्षा पर ज्यादा बल दिया विद्यार्जन की महत्व का वर्णन बिद्या बिन मति गयी, मति बिना नीति गयी, नीति बिना गति गई, गति बिना वित्त गया, वित्त बिना शूद्र हताश हुए और गुलाम बनकर रह गये। ।

महात्मा ज्योतिबा फुले ने इस प्रकार दिया है। विद्या के अभाव सेमति (सोचने की शक्ति) नष्ट हुई, मति के अभाव से गति (परिवर्तनशीलता) नष्ट हुई, गति के अभाव से वित्त अर्थव्यवस्था नष्ट हुई आर वित्त के अभाव से शूद्रों का पतन हुआ। मात्र अज्ञान के कारण ये सब कुछ हुआ। महात्मा ज्योतिबा फुले अब समझ गये थे कि अस्पृश्यता, जाति व्यवस्था और जन्म से ऊँच नीच क भेदभाव के रहते पिछड़े लोग आगे नहीं बढ़े। उन्होंने थोड़े समय के लिए विद्यालय बन्द कर दिया। थोड़े ही दिनों में गोविन्द ने जूनागंज पेठ में ज्योति की पाठशाला के लिए जगह का प्रबन्ध कर दिया। स्कूल फिल खुल गया, दलितों में जोश की लहर फैल गयी। महात्मा ज्यातिबा फुले को अब सुधारवादी ब्राम्हण मित्रों से भी सहयोग समर्थन मिलने लगा। उनमें से कई उसके विद्यालय में फैलती। विधवा पुनर्विवाह कानून जब पास हुआ, तो महाराष्ट्र के अगुवा महापुरूष महात्मा ज्योतिबा फुले ने कहा – ''विधवाओं का पुनर्विवाह करवाना एक सामाजिक दायित्व है, यह य़ुग की ज्वलन्त समस्या है और युग धम का तकाजा है, कि समाज के सभी वग इस समस्या के समाधान में मदद करें। उन्हें आश्रय दें तथा यथा योग्य अपनायें। उन्होंने यह सिद्ध किया कि किसी भी धर्म ग्रन्थ में विधवाओं के पुनर्विवाह पर रोक नहीं है।'' नारियों का मुक्ति दिलाने में सावित्री बाई का अद्वितीय योगदान है।

इस बात को महात्मा ज्योतिबा फुले ने बड़े गर्व के साथ व्यक्त किया है – कि नारी शिक्षा, नारी जागृति एवं नारी उद्धार हेत ु सावित्री बाइ ने अपने पति का सक्रिय साथ

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)

निभाती रही। आदिकाल स बराबर रूढिवादी परम्परा को तोड़कर नारी को मुक्ति दिलाने का एक कठिन, किन्तु ऐतिहासिक कार्य था, जिसे रोकने में महात्मा ज्योतिबा फ‌ले सफल रहे। महात्मा ज्योतिबा फुले ने सामाजिक सुधार में 28 जनवरी 1853 का अपने पड़ोसी उस्मान शेख के यहाँ ''बाल हत्या प्रतिबंधक गृह'' की स्थापना की। जिसमें दो चार साल में सौ से अधिक विधवाओं की प्रसूति हुई। इस गृह की पूरी व्यवस्था और देखभाल सावित्रीबाई करती थी। सावित्रीबाइ खुद निःसंतान थी, लकिन फिर भी उन्होंने ऐसी विधवाओं की उन्नीसवीं शताब्दी के सामाजिक सुधार आंदोलन कोख से जन्म अनेक बच्चों की माता बनकर उनकी सेवा एवं परवरिश का महान कार्य किया। इतना ही नहीं उन्होंने पुणे के अनाथालय में जन्में एक ब्राम्हण विधवा के बच्चें को गोद लिया, उस अपना नाम दिया तथा उसका अपने पुत्र के सामान लालन–पालन किया। 1871 में उन्होंने विधवाओं के शिशुओं के लिए पूना में आश्रम स्थापित किये। उन्होंने पर्चें लगवा दिये कि जो विधवायें अपने बच्चों को जन्म देने या शिश पालन करने की इच्छुक हैं, वह उनके आश्रम मे आ सकतो है। यह भी एक संयोग की बात ह कि अधिकांश ब्राम्हण स्त्रिया ही तिरस्कृत की जाती थी। भारत में इतना क्रातिकारी कदम महात्मा ज्योतिबा फुल के अतिरिक्त और कोई भी नही उठा सकता था। देश में यह अपनी तरह का प्रथम आश्रम था। जिसका उद्देश्य इतने स्पष्ट सधारवादी और प्रगतिशील थे। इस प्रयास ने महिला मुक्ति इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा, नये विचारों को जन्म दिया, नयी परम्परायें स्थापित की। दलितो के उद्धार के साथ–साथ समाज सुधारक भी थे।

इस सन्दर्भ में उन्होंने रूचि रहे, संघर्ष करते रहे। गौतम बुद्ध के पश्चात् महात्मा ज्योतिबा फ‌ले ने सामाजिक चेतना और सत्यमार्ग का पथ उन लोगों को दिखाया, जिनके प्रगति के माग अवरूद्ध कर दिये गये और जिनकी आत्म ज्योति बुझा दी गयी। उन्होंने मानसिक रूप से मंद और आर्थिक रूप से पंगु बनाये गये समाज में क्रांति का बीज बोया। वे निर्भीक देश भक्त, समाज सुधारक और शिक्षा विद थे। वह ब्राम्हण जाति के विरोधी नहीं थे, अपितु उनमें व्याप्त जड़ता और धर्म के नाम पर लूट खसोट के विरूद्ध थे। वे धर्म विरोधी नहीं थे, पर उन कुरीतियों, अंधविश्वासों, अस्पृश्यता तथा ऊँच नीच के विरूद्ध थे। जिन्हें धार्मिक मान्यता प्रदान कर दी गयी थी। वे अपने युग से बहुत आगे की बात सोचते थे, वे मंत्र दृष्टा ऋषि थे। महात्मा फुले का जीवन इस देश की मनुवादी सामाजिक व्यवस्था के विरूद्ध संघर्ष का वह मजबूत कदम था, जिसने कि आग चलकर एक देशव्यापी आन्दोलन का रूप धारण कर लिया है। वस्तुतः महात्मा ज्योतिबा फुले को अगर भारत में सामाजिक क्रान्ति के पितामाह की संज्ञा दी जाये, तो

यह अतिश्योक्ति नहीं होगी। स्वयं बाबा साहब अम्बेडकर ने महात्मा ज्योतिबा फुले को अपना गुरू स्वीकार किया। वस्तुतः बाबा साहेब ने एक बार कहा था कि अगर इस धरती पर महात्मा फुले जन्म नहीं लेते तो अम्बेडकर का निर्माण नहीं हो सकता। उन्नीसवीं शताब्दी के सामाजिक सुधार आंदोलन था। महात्मा ज्योतिबा फुले के आन्दोलन का भारत की सामाजिक क्रांति क इतिहास में विशेष स्थान है। 19वीं सदी में इस दिशा में उन्होंने पथ–प्रदर्शक प्रयास किये है। महात्मा ज्योतिबा फुले अछूतों के मसीहा, स्त्री शिक्षा के कर्णधार, हिन्दू विधवाओं के उद्धारक और ब्राम्हणवाद के कट्टर शत्रु थे। वे एक ऐसे समाज की संरचना के लिए आजीवन प्रयत्नशील रह, जिसका आधार सामाजिक और न्यायिक समानता हो। उन्होंने शूद्रों के हितों की रक्षा के लिए तथा महिलाों के उद्धार करने के उद्देश्य से एक जबरदस्त आंदोलन प्रारम्भ किया था। महाराष्ट्र के कट्टरपंथी ब्राम्हणों ने महात्मा ज्योतिबा फुले के कार्यों का विरोध किया था, किन्तु वे अपने मार्ग पर अडिग रह। महात्मा गाँधी ने उन्हें ''वास्तविक महात्मा'' और वीर सावरकर ने उन्हें क्रांतिकारी समाज सुधारक कहा है। महात्मा ज्योतिबा फुले ने निर्णय किया कि मै हिन्दू समाज में व्याप्त छूआछूत, ऊँच–नीच, अन्याय, अमानवीयता और धम के नाम पर पल रहे, अधर्म को खत्म करके रहूँगा। दलित शोषित समाज को सवर्णों की दासता से मुक्त करूँगा। उन्हें सामाजिक विषमताओं को जन्म देने वाले लोगों से और उन्हें नये प्रतिष्ठित मन्दिरों में प्रवेश करने दो। लोगों ने उनकी बातें मानना शुरू कर दी।

उन्नीसवीं शताब्दी के सामाजिक सुधार आंदोलन उन्होंने सर्वप्रथम अरूविप्पुरम मे एक ऐसे मंदिर की स्थापना की। जिसमें देवता की जगह आइने का एक टुकड़ा था। कई शिव मंदिरों की स्थापना की, जिनके पुजारी पिछड़ी और दलित जाति के व्यक्ति हाते। यदि कोई और नीचे जाति का व्यक्ति ऐसा काम करता, तो ऊँची जाति वाले उसे नहीं छोडते। लेकिन नारायण गुरू का विरोध करने की हिम्मत किसी में नहीं थी। वे विवाह आदि में फिजूल खर्ची व कर्म काण्ड के विराधी थी। शिक्षा और उद्योगों को प्रोत्साहन दिया। उनका प्रयास था कि दलित वर्ग के लोग मिलकर रहे व साथ–साथ आगे बढ़े।

उपरोक्त समस्याओं को दूर करने हेतु विभिन्न धर्मो एवं समाजों के भीतर विभिन्न संगठन एवं संस्थाएँ, उभरी जिन्होंने कतिपय दोषों को दूर करने हेतु भिन्न–भिन्न प्रयास किये। कुछ विद्वानों ने सुधार हेतु प्राच्य साहित्यों पर बल दिया तो कुछ ने नवीन विचारों से लैश आधुनिक शिक्षा का योगदान लिया।

यद्यपि सामाजिक सुधारों में ग्राह्य मौलिक प्राच्य विचारों का योगदान था फिर भी परंपरागत शिक्षा भारतीय समाज की समसामयिक जरूरतों को पूरा करने में पूर्ण रूप से सफल नहीं था। यह कार्य केवल आधुनिक शिक्षा के माध्यम से ही किया जा सकता था। भारत में आधुनिक शिक्षा के प्रसार हेतु व्यापक प्रयास अंग्रेजी सरकार द्वारा ही किया गया और यह प्रयास भारत में पाश्चात्य विचारों  एवं शिक्षा का प्रसार करते हुए भारतीय समाज में कुछ मूलभूत परिवर्तन के साथ अंग्रेजी हितों की रक्षा करती ही थी। इसके लिए सरकार ने विभिन्न योजनाओं एवं सुधारों को जन्म दिया। अंग्रेजों के इन प्रयासों से भारतीय सामाजिक विचारों एवं मूल्यों पर पाश्चात्यीकरण का अनवाश्यक दबाव पड़ा।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :**


1. पाठक उमा, राममोहन राय, आत्माराम कम्पनी एण्ड सन्स लखनऊ, पृष्ठ संख्या 154
2. पाठक उमा, राममोहन राय, आत्माराम कम्पनी एण्ड सन्स लखनऊ, पृष्ठ संख्या 155
3. सिंह पंकज, भारत के नवजागरण के जनक – राजा राममोहन राय, पाण्डुलिपि, पृष्ठ संख्या 2
4. बाला रेनू, महात्मा गांधी एवं डॉ. बी.आर. अम्बेडकर का दलितों के प्रति दृष्टिकोण : एक तुलनात्मक अध्ययन अप्रकाशित शोध प्रबंध, 2011 पृष्ठ संख्या 95
5. बाला रेनू, महात्मा गांधी एवं डॉ. बो.आर. अम्बेडकर का दलितों के प्रति दृष्टिकोण : एक तुलनात्मक अध्ययन अप्रकाशित शोध प्रबंध, 2011 पृष्ठ संख्या 95
6. पाठक उमा, राममोहन राय, आत्माराम कम्पनी एण्ड सन्स, लखनऊ, पृष्ठ संख्या 156
7. बेसेन्तरी देवेन्द्र कुमार, भारत के सामाजिक क्रांतिकारी, पृष्ठ संख्या 104
8. बाला रेनू, महात्मा गांधी एवं डॉ. बी.आर. अम्बेडकर का दलितों के प्रति दृष्टिकोण : एक तुलनात्मक अध्ययन अप्रकाशित शोध प्रबंध, 2011, पृष्ठ 96.